"ईमानदारी मेहनत जिसकी शान है–वह मेरे देश का किसान है"

पंत प्रसार संदेश

वर्ष : 20, अंक : 3 (जुलाई–सितम्बर, 2025)

कुलपति संदेश

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में विकसित कृषि तकनीकों को कृषक समुदाय के बीच लोकप्रिय बनाना हमेषा से चुनौतीपूर्ण रहा है। प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण की दिशा में कृषि विज्ञान केन्द्रों की भूमिका सदैव से महत्वपूर्ण रही है। विगत कई वर्षों से कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषकोपयोगी तकनीकों को किसानों तक सुगमता एवं सफलतापूर्वक पहुँचाने का कार्य बखूबी किया जा रहा है। अनुसंधान और कृषकों के बीच सेतु के रूप में कार्य कर रहे कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप किये जा रहे कार्य इसका परिचायक है। बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन, फल वृक्षों को बढ़ावा दिया जाना एवं मोटे अनाजों की वैज्ञानिक विधि से खेती व मूल्यवर्धित उत्पादों का ज्यादा से ज्यादा प्रचार–प्रसार करने की आवश्यकता है। ये फसलें किसानों की आजीविका संवर्धन में वरदान साबित हो सकती हैं।

हरित क्रान्ति का प्रवेष द्वार कहलाने वाले पंतनगर विश्वविद्यालय ने खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने के साथ–साथ पूरे देश के कृषक समुदाय को "पंतनगर बीज" उपलब्ध कराकर किसानों के बीच अपनी एक विषिश्ट छवि बनायी है। कृषक आज भी पूर्ण विश्वास के साथ पंतनगर के बीज व अन्य विकसित कृषि तकनीकों का प्रयोग करते हुए उन्नत खेती करते आ रहे हैं। साथियों, आगामी अक्टूबर 10–13, 2025 को विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। मेले में रबी फसल एवं सब्जियों के उन्नत बीज, कृषि यंत्र, विकसित तकनीक के प्रदर्शन हेतु शोध केन्द्रों का भ्रमण, कृषि गोश्ठी इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि मेले में भाग लेकर नवीनतम कृषि सम्बन्धी विधाओं के बारे में जाने–समझें और उन्नत कृषि की ओर कदम बढ़ायें। इसके साथ ही एक बार पुनः "विकसित कृषि संकल्प अभियान" रबी मौसम, अक्टूबर 03–18, 2025 का आयोजन पूरे देश में किया जा रहा है। मैं आह्वान करूंगा कि इस अभियान में भी किसान भाई–बहन बढ़–चढ़ कर हिस्सा लें। डा. जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं निदेशक, समेटी–उत्तराखण्ड तथा डा. बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) प्रसार शिक्षा निदेशालय को त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" के सफल प्रकाषन हेतु बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(डा० मनमोहन सिंह चौहान)
कुलपति

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषि के लिए उपयोगी सिद्ध हो रही त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" के जुलाई–सितम्बर, 2025 अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड का अध्ययन करने के उपरान्त यह प्राप्त होता है कि इस प्रदेश में कृषि कार्य के लिए अनेक विषम स्थितियां हैं। इस पर्वतीय प्रदेश का अधिकांश हिस्सा पर्वतीय है, जहाँ कृषि कार्य को करने के लिए संसाधनों की उपलब्धता, तकनीकों के प्रसार की समस्या, छोटे–छोटे खेत, परम्परागत विधि से कृषि कार्यों का संचालन, उन्नत तकनीकों का अभाव है। कच्चे गोबर की खाद के प्रयोग जैसी कई समस्यायें विद्यमान हैं। इन सभी क्षेत्रों में हो रहे बदलाव एवं समस्याओं से अभी भी हमारे किसान पूर्ण रूप से परिचित नहीं हैं। ग्रामीण अंचलों में कृषि कार्य में जुड़े लोगों के बीच हरित क्रांति तथा अन्य आधुनिक कृषि तकनीकें सही ढंग से पहुंच नहीं पाई हैं। गत वर्षों में सरकार द्वारा कृषि विषयक कई कार्यक्रमों का संचालन इस क्षेत्र में किया जा रहा है।

वर्तमान में आधे से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रही है जो कृषि कार्यों में संलग्न है। ऐसे में विकासपरक् योजनाओं का पहुंचना, प्राकृतिक खेती, ड्रोन का कृषि में उपयोग, स्वरोजगारपरक कृषि तकनीकों का प्रसार होना भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के साथ–साथ उत्तराखण्ड का विकास हो सके। आज जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ रही है उसी अनुपात में खाद्य समस्या, कृषि क्षेत्रों की समस्या और चुनौतियां बढ़ रही हैं। ऐसे में पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय उन चुनौतियों से निपटने और ग्रामीण क्षेत्रों से संबद्ध रखने वाले कृषकों को कृषि क्षेत्रों में हो रहे बदलावों, तकनीकों के सुगमता से पहुंचाने के साथ कृषकों को भविष्य की चुनौतियों से निपटने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इस पत्रिका में कृषि क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान, कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम, सरकार द्वारा कृषि को लेकर किए जा रहे कार्यों को लेकर जानकारी समाहित है, जिससे हमारे हितधारकों, कृषि में संलग्न कृषकों, कृषि को लेकर अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों को नवीनतम जानकारी मिल सकें। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन अवसर पर गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर के सभी सहयोगियों, प्रकाषन से जुड़े सभी सदस्यों को अपनी ओर से शुभकामनाएं देता हूँ।

शुभमस्तु!

(डा. संजय कुमार)
क्षेत्रीय निदेशक, प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, नीलोखेड़ी, हरियाणा

किसी भी फसल के उत्पादन की सफलता या विफलता मौसम पर निर्भर करती है। आज जलवायु परिवर्तन पूरी दुनिया के सामने एक विकट चुनौती बनकर खड़ा है, जो इसके वैश्विक दुष्प्रभावों के कारण वैज्ञानिकों एवं नीति निर्धारकों के लिए बहस का बड़ा मुद्दा बना हुआ है। फसल की बुवाई से लेकर कटाई, मड़ाई एवं भण्डारण तक किये जाने वाले समस्त कृषि कार्यों में मौसम की अहम भूमिका होती है। वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि के मद्देनजर जलवायु सम्बन्धी समस्याओं को कम करते हुए वैश्विक खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करना विश्व समुदाय के सामने एक गम्भीर चुनौती है। जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु यथोचित कदम जैसे सुरक्षा प्रतिरोधी प्रजातियाँ, सस्य विधियों में आवश्यकता आधारित परिवर्तन, संरक्षित कृषि, शुष्क जलवायु आधारित कृषि को प्रोत्साहन, सिंचाई जल व पोषक तत्वों का कुशल प्रबन्धन, जल स्रोतों व नौलों का संरक्षण एवं संवर्धन, मौसम व वर्षा आधारित पूर्वानुमान आदि तकनीकों की नितान्त आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त कृषकों को उनके क्षेत्र के अनुरूप आय सृजन आधारित कृषि स्वरोजगारपरक उद्यमों जैसे मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, जैविक कृषि, कुक्कुट पालन, डेयरी आदि में निपुणता हासिल कर हाथ आजमाने की आवश्यकता है, जिससे प्रतिकूल मौसम में भी उनकी आर्थिकी मजबूत बनी रहे। पंत विश्वविद्यालय व इसके अधीन कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्र अपनी स्थापना से ही सदैव कृषकों के आर्थिक उन्नयन हेतु उनके साथ खड़े रहते हैं। यहाँ यह भी समीचीन होगा कि हमें मोटे अनाजों के महत्व को न भूलते हुए इनकी खेती का विस्तार एवं मूल्यवर्धन पर बल देना होगा। इन फसलों की खेती से विशेषकर पर्वतीय क्षेत्र के कृषक लाभान्वित हो सकते हैं।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" का प्रकाषन किया जा रहा है। मैं सम्पादक मंडल को "पंत प्रसार संदेश" पत्रिका के सफल प्रकाशन करने हेतु बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हित धारकों हेतु लाभकारी सिद्ध होगी। यह क्रम निरन्तर बना रहे, ऐसी मेरी शुभकामना है।

(प्रोफेसर मान सिंह)
परियोजना निदेशक (सेवानिवृत्त)
जल प्रौद्योगिकी केन्द्र, भा.कृ.अ.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : अक्टूबर–दिसम्बर

अक्टूबर : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान : शीघ्र एवं मध्यम शीघ्र अवधि में पकने वाली किस्मों की कटाई करें। देर से पकने वाली किस्मों में दाना बनते समय सिंचाई करें तथा रोग व कीट नियंत्रण हेतु संस्तुति अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

गन्ना : कंडुवा संक्रमित पौधों को निकालकर जला दें। फसल में हल्की सिंचाई करें, इससे गन्ने का वजन बढ़ेगा। शरदकालीन गन्ने की बुवाई 15 अक्टूबर तक अवश्य कर लें। पिछले माह बोयी गयी फसल में बुवाई के 25–30 दिन पर गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

मक्का : फसल पकने पर भुट्टों को ढकने वाली पत्तियाँ पीली होने लगती है। इस अवस्था पर कटाई कर लें।

मूँगफली : समय पर बुवाई की गई फसल की खुदाई कर लें तथा फलियों को सुखाकर भण्डारित करें।

तोरिया (लाही), पीली सरसों एवं राई : तोरिया की बुवाई माह के प्रथम सप्ताह तक अवश्य कर लें तथा पीली सरसों एवं राई की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े तक कर लें।

गेहूँ, जौ, चना, मटर एवं मसूर : असिंचित दशा में फसल की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें। प्रजातियों का चयन, बीज की मात्रा, बीज शोधन, बुवाई की विधि एवं उर्वरकों का प्रयोग संस्तुति अनुसार करें।

अक्टूबर : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

मंडुवा, झंगोरा, काकुन एवं रामदाना : मध्यम एवं ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फसल की कटाई कर लें।

सोयाबीन : फसल परिपक्व होने पर पत्तियाँ पीली होकर गिर जाती हैं। ऐसी अवस्था पर फसल की कटाई कर 2–3 दिन तक सुखाने के बाद डंडों से पीटकर दाने अलग कर लें।

धान : मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में रोपित धान की परिपक्व फसल काट लें तथा 2–3 दिन सुखाने के पश्चात् गहाई कर दाना निकाल लें।

गहत (कुल्थी), राइसबीन (नौरंगी), राजमा एवं मक्का : तैयार फसल की यथासमय कटाई कर लें।

गेहूँ एवं जौ : असिंचित दशा में अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े तथा घाटी व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में द्वितीय पखवाड़े में करें। अच्छी उपज हेतु प्रजातियों का चयन, बीज की मात्रा, बीज शोधन, बुवाई की विधि एवं उर्वरकों का प्रयोग संस्तुति अनुसार करें।

तोरिया (लाही/घरिया), पीली सरसों एवं राई–सरसों (राड़ा) : तोरिया एवं पीली सरसों की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में तथा राई की बुवाई असिंचित दशा में माह के प्रथम पखवाड़े व सिंचित दशा में द्वितीय पखवाड़े में करें।

चना, मटर एवं मसूर : चने की खेती कम ऊँचाई तथा मटर व मसूर की मध्यम ऊँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में की जा सकती है। असिंचित दशा में चने की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें।

अक्टूबर : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। झुलसा बीमारी से बचाव के लिये 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल–45 का छिड़काव करें। नई फसल की 60x45 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

आलू : आलू की बुवाई का उचित समय है। नई किस्मों कुफरी ख्याती, कुफरी चिपसोना 3 का चुनाव करें। खेत की आखिरी जुताई पर 75:100:100 कि.ग्रा. नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश प्रति है. की दर से डाले व 60x15 सेमी. की दूरी पर बुवाई करें।

फूलगोभी : फसल हेतु खेत की आखिरी जुताई पर 75:100:100 कि.ग्रा. नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश प्रति है. की दर से डालकर 60x50 सेमी. की दूरी पर रोपाई, तत्पष्चात् हल्की सिंचाई करें।

पालक/मैंथी व धनियां : पूर्व में बोई गई फसलों में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। यदि अभी तक बुवाई नहीं हो पाई हैं तो शीघ्र ही बुवाई करें। खेत की आखिरी जुताई पर 50:60:60 कि.ग्रा. प्रति है. की दर से नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश डालकर 30 सेमी. की दूरी पर बुवाई करें।

अक्टूबर : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : तैयार टमाटर को थोड़ा पकने से पूर्व पीला पड़ने की अवस्था पर तोड़ें, जिससे विपणन तक फल पककर तैयार हो जाय।

पालक/मैंथी व धनियाँ : पत्तियों की कटाई कर बाजार भेजने से पूर्व सड़ी गली पत्तियों को निकाल दें और छोटी–छोटी गड्डियां बनाकर बाजार भेजें।

अक्टूबर : मैदानी क्षेत्र–फल

नीबूवर्गीय फल : बाग की जुताई करें। पेड़ों पर ब्लाइटॉक्स–50 (0.25 प्रतिशत) का घोल बनाकर छिड़काव करें।

अमरूद : बरसाती फसल को तोड़कर बाजार भेंजे। सर्दी वाली फसल के फलों पर ब्लाइटॉक्स–50 (0.25 प्रतिशत) या इन्डोफिल–45 (0.2 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

आवंला : बाग में सिंचाई की नालियां बना लें। तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्वीनालफास 25 ई.सी. (0.1 प्रतिशत) तथा रस्ट की रोकथाम हेतु ब्लाइटॉक्स–50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

अक्टूबर : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब व नाशपाती : पछेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें। मूलवृंत तैयार करने के लिए पौधशाला में बीजों की बुवाई करें।

आड़ू, आलू बुखारा एवं खुबानी : बाग को स्वच्छ रखें। जड़ बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्लोरोपाइरोफास (4 मि.ली./10 लीटर पानी में) घोल बनाकर थालों में डालें।

नवम्बर : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान, उर्द, मूँग, सोयाबीन एवं तिल : देर से बोयी गयी फसलों की कटाई कर लें।

गन्ना : पेड़ी गन्ने के रस में ब्रिक्स की मात्रा 18 प्रतिशत होने पर कटाई कर लें। नौलख फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। शरदकालीन गन्ने में बुवाई के 25–30 दिन पर निराई–गुड़ाई करें तथा खरपतवार की ज्यादा समस्या होने पर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का प्रयोग करें।

तोरिया (लाही), पीली सरसों एवं राई : राई एवं देर से बोयी गयी तोरिया व पीली सरसों की फसल में फूल आने से पूर्व हल्की सिंचाई करें तथा सिंचाई के पश्चात् नत्रजन की टॉप–ड्रेसिंग करें। समय पर बोयी गयी तोरिया व पीली सरसों की फलियों में दाना भरते समय हल्की सिंचाई करें।

गेहूँ एवं जौ : असिंचित फसल की बुवाई माह के प्रथम सप्ताह तथा सिंचित की प्रथम पखवाड़े में करें। अधिक पैदावार हेतु प्रजातियों का चयन, बीज की मात्रा, बीज शोधन, बुवाई की विधि एवं उर्वरकों का प्रयोग संस्तुति अनुसार करें।

चना, मटर एवं मसूर : पिछले माह असिंचित दशा में बोयी गयी फसल में 25–30 दिन की अवस्था पर निराई–गुड़ाई कर खरपतवारों को निकाल लें। सिंचित दशा में फसलों की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें।

नवम्बर : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ व जौ : सिंचित दशा में मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फसल की बुवाई माह के प्रथम सप्ताह तथा घाटियों व कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में द्वितीय सप्ताह तक करें।

तोरिया (लाही/घरिया), पीली सरसों एवं राई (राड़ा) : तोरिया एवं पीली सरसों की फसल एक माह की होने पर हल्की सिंचाई करें तथा संस्तुति के अनुसार नत्रजन की टॉप–ड्रेसिंग करें।

चना, मटर एवं मसूर : इन फसलों की बुवाई माह के प्रथम सप्ताह तक अवश्य कर लें। पिछले माह बोयी गयी फसल में यथासमय निराई कर खरपतवार निकाल लें।

नवम्बर : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

आलू : फसल की पहली सिंचाई करें, जिसमें जमाव पूरा हो जायेगा। बुवाई के 35–40 दिन बाद खड़ी फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया/है. डालें। झुलसा रोग नियंत्रण हेतु बुवाई के 35 दिन बाद संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

मूली व गाजर : जड़ों की सफाई कर बाजार भेंजे। फसलों में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। खड़ी फसल में 50 कि. ग्रा. यूरिया/है. डालें।

मटर : फसल में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें। तैयार फलियों की तुड़ाई कर बाजार भेजें।

नवम्बर : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

बैंगन व मिर्च : तैयार फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। बाजार भेजने से पूर्व फलों छंटाई करें। कीट एवं रोगग्रस्त फलों को निकाल दें।

फूलगोभी, पातगोभी व गांठगोभी : तैयार गोभियों को बाजार भेजने की व्यवस्था करें। फसलों में आवश्यकतानुसार निराई, गुड़ाई व सिंचाई करें।

नवम्बर : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : आम को मीली बग से बचाने के लिए तनों पर पॉलीथीन की 30 सेमी. चौड़ी पट्टी गोलाई में बांधकर दोनों सिरों पर ग्रीस लगाना चाहिए।

लीची : थालों की सफाई करें। बाग को स्वच्छ रखें। छोटे पौधों को पाले से बचाने हेतु छप्पर का प्रयोग करें।

आंवला : बाग की सफाई करें। यदि फल गिर रहे हों तो बोरेक्स का छिड़काव करें। इस माह के अन्त तक अगेती किस्मों के पेड़ों से फल की तुड़ाई करें।

नवम्बर : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब एवं नाशपाती : थालों की निराई–गुड़ाई करें। बाग की सफाई करें। पौधशाला में बीजों की बुवाई करें।

आड़ू, खुबानी व बादाम : बाग की सफाई करें। थालों में बीजों की बुवाई करें। आड़ू की पर्ण संकुचन माहू की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अखरोट, पांगर, मोटिया बादाम व पीकनट : बाग की सफाई करके थालों की निराई–गुड़ाई करें। पौधशाला में बीजों की बुवाई करें।

दिसम्बर : मैदानी क्षेत्र–फसल

अरहर : खेत में नमी की कमी होने पर फसल में हल्की सिंचाई करें। पछेती फसल की निगरानी करते रहे तथा रोग अथवा कीट की समस्या होने पर संस्तुति अनुसार नियंत्रण करें।

गन्ना : पेड़ी फसल की तुरन्त कटाई करें, जिससे उसके बाद गेहूँ की बुवाई की जा सके। शरदकालीन गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

तोरिया (लाही), पीली सरसों एवं राई : देर से बोयी गयी तोरिया एवं पीली सरसों तथा समय पर बोयी गयी राई की फसलों में दाना बनते समय हल्की सिंचाई करें। कीट अथवा रोगों की समस्या होने पर संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें। सितम्बर में बोयी गयी तोरिया एवं पीली सरसों की फसल में 75 प्रतिशत फलियाँ सुनहरे रंग की होने पर कटाई कर लें।

गेहूँ एवं जौ : फसल की बुवाई 25 दिसम्बर तक कर लें अन्यथा उपज में काफी कमी आ जाती है। असिंचित दशा में बोयी गयी फसल में निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। फसल की पछेती बुवाई माह के मध्य तक कर लें।

दिसम्बर : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

गेहूँ : असिंचित दशा में बोयी गयी फसल में आवश्यकतानुसार निराई कर खरपतवार निकाल लें तथा सिंचित फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु संस्तुत खरपतवारनाशी रसायन का प्रयोग करें।

तोरिया (लाही/घरिया), पीली सरसों एवं राई (राड़ा) : फसल की समय–समय पर निगरानी करते रहें। कीट अथवा रोग की समस्या आने पर नियंत्रण हेतु संस्तुति अनुसार रसायनों का प्रयोग करें। घाटियों एवं निचले पर्वतीय क्षेत्रों में समय पर बोयी गयी फसल में दाना भरते समय हल्की सिंचाई करें।

चना, मटर एवं मसूर : फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

दिसम्बर : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

बैंगन : फलों की तुड़ाई उचित अन्तराल पर करते रहें। फसल में फल छेदक कीड़ों का प्रकोप हो तो संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

फूलगोभी : पछेती प्रजातियों के बीज तैयार नर्सरी में 10 सेमी. की दूरी पर बनी नालियों में बुवाई कर दें। बीज की बुवाई के तुरन्त बाद नर्सरी को सूखी घास से ढ़ककर हजारे से हल्की सिंचाई करें। मध्य कालीन फसल की निराई, गुड़ाई तथा सिंचाई करते रहें।

टमाटर : आवश्यकतानुसार 10–15 दिनों के अन्तर पर हल्की सिंचाई करें। पौधों को वायरस से बचाने के लिए संस्तुत रसायन का छिड़काव करें। एक माह पुरानी फसल में 30 कि.ग्रा. नत्रजन/है. की दर से टॉप ड्रेसिंग करें।

पत्तियों वाली सब्जियाँ : पालक, धनिया, मैंथी, सोया आदि फसलों की निराई, हल्की सिंचाई एवं 40 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति है. की दर से छिड़क दें।

दिसम्बर : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : आलू की बुवाई का कार्य पूर्ण करें। अगेती एवं पछेती झुलसा रोग के लक्षण दिखते ही इसके नियंत्रण हेतु मैंकोजैब के 0.25 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। रोग आने पर एक सप्ताह के अन्तर पर तीन–चार छिड़काव करना चाहिए। यदि खेत छोटा हो तो आलू के फूलों की तुड़ाई करें, इससे कन्द का अच्छा विकास होगा।

मटर : असिंचित दशा में मटर की अगेती किस्में अर्किल मटर, वी.एल. 7, पंत सब्जी मटर, आजाद मटर 3 की बुवाई करें। बीज शोधन थायरम 2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज की दर से करें। बीज दर 2 से 2.25 कि.ग्रा. प्रति नाली रखें।

पालक, मैंथी व धनियां : पत्तियों की कटाई करें, सड़ी–गली पत्तियों को निकालें और गड्डियां बनाकर बाजार भेजें। कटाई का काम सुबह करना उत्तम रहता है।

प्याज : सिंचित घाटी में नवम्बर में रोपाई किये गये प्याज की फसल में पहली निराई–गुड़ाई रोपाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरी पहली के 25–30 दिन बाद करनी चाहिए।

दिसम्बर : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : मिलीबग की रोकथाम हेतु पिछले महीने यदि ग्रीस की पुताई न की गई हो तो इस माह अवष्य कर दें। छोटे पौधों को पाले से बचाने के लिए टट्टियों लगायें, जिस रात पाला पड़ने की सम्भावना हो बाग में धुंआ करें।

अमरूद : पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बाग को साफ रखें।

पपीता : पौधों को पाले से बचाने के लिए धुंआ करें और बाग में पर्याप्त नमी बनाएं। कच्चे फलों को टाट अथवा बोरे से ढक दें। प्रति पौधों के हिसाब से 200 ग्राम सिंगल सुपरफास्फेट और 125 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश थालों में मिलाकर दें।

लीची : छोटे पौधों को पाले से बचाने के लिए छप्पर का प्रबन्ध करें। पौधों को तीन तरफ से ढके और पूर्व दक्षिण दिशा में खुला रहने दें।

दिसम्बर : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब : पछेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेंजे। मूलवृंत तैयार करने के लिए पौधशाला में बीजों की बुवाई करें। तने के रोगों की रोकथाम के लिए संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

नाशपाती : पछेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें। पौधशाला में बीजों की बुवाई करें।

आड़ू, आलूबुखारा एवं खुबानी : बाग को स्वच्छ रखें। जड़ बेधक कीट की रोकथाम हेतु क्लोरोपाइरीफास (4 मि.ली./10 लीटर पानी में) घोल बनाकर थालों की सिंचाई करें।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा 17.1 है0 क्षेत्रफल पर 205 कृषकों के खेतों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं अनुकरणीय परीक्षण संचालित किये जा रहे हैं। केन्द्र के वैज्ञानिक समय–समय पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का भ्रमण कर कृषकों को आवश्यक तकनीकी जानकारी प्रदान करते है।
- रेखीय विभाग द्वारा आयोजित छः किसान गोश्ठियों में वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान देकर कृषि आधारित तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी। केन्द्र पर 02 भ्रमण कार्यक्रमों में 27 कृषकों द्वारा भ्रमण किया गया तथा इनके द्वारा प्रदर्शित तकनीकियों का अवलोकन किया गया। इसी क्रम में 14 कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन कर कृषकों की कृषि समस्याओ का निराकरण किया गया।

गाजर घास उन्मूलन जागरूकता अभियान

- दिनांक 16–22 अगस्त, 2025 तक केन्द्र द्वारा गाजर घास उन्मूलन जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न ग्रामों में किया गया। विगत त्रैमास में केन्द्र पर तीन प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया गया, जिसमें 56 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र द्वारा दिनांक 17.09.2025 से 02.10.2025 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया, जिसमें निकटतम ग्रामों में जाकर किसानों को स्वच्छता के बारे मे जानकारी प्रदान की गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- केन्द्र द्वारा माह सितम्बर 2025 में गृह विज्ञान विषयान्तर्गत किशोरियों हेतु ''ग्रामीण किशोरियों में रक्त अल्पता की प्रबलता'' विषय पर 11 से 17 वर्षीय किशोरियों पर प्रक्षेत्र परीक्षण का आयोजन किया गया। उक्त परीक्षण में 10 किशोरियों को उनके बी. एम.आई. के आधार पर चयनित कर उनके दैनिक आहार के साथ प्रतिदिन 50 ग्राम सोयाबीन आटा एवं 100 ग्राम पोहा पूरक आहार के रूप में दिया गया।
- दिनांक 28.07.2025 को सशस्त्र सीमा बल, ग्वालदम के उप महानिरीक्षक द्वारा केन्द्र स्थित विभिन्न प्रदर्शन इकाईयों का भ्रमण किया गया एवं सषस्त्र सीमा बल के कर्मियों हेतु कृषि तकनीक हस्तान्तरण सम्बन्धी चर्चा की गयी।

उप महानिरीक्षक, सषस्त्र सीमा बल का केन्द्र पर भ्रमण

- केन्द्र द्वारा माह–जुलाई 2025 में कृषकों हेतु मशरूम उत्पादन विषयक प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। आयोजन पूर्व दो दिवसीय कौषल प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 20 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- दिनांक 25.09.2025 को पीपुल्स साइंस इंस्टीट्यूट, देहरादून द्वारा कृषकों हेतु केन्द्र पर शैक्षणिक भ्रमण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषकों को विभिन्न फसलों में लगने वाले कीट–बीमारियों के निदान, मृदा पोषण, एफ.पी.ओ. एवं स्थानीय फलों एवं उत्पादों के मूल्यसवंर्धन के बारे में जानकारी उपलब्ध करायी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत 02 हे0 में 10 कृषकों के प्रक्षेत्र पर पन्त हिल तोरिया–1 प्रजाति का प्रजातीय प्रदर्शन लगाया गया। महिलाओं के कार्य बोझ में कमी लाने हेतु डंग कलेक्टर का प्रयोग एवं महिलाओं के पोषण स्तर में सुधार लाने हेतु पौष्टिक अनाज मिश्रण के मूल्यांकन विषय पर दो ऑन फार्म ट्रायल लगाये गये।
- केन्द्र द्वारा ग्रामीण युवाओं हेतु 15 प्रशिक्षण तथा आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं हेतु 01 प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें 315 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। प्राकृतिक खेती मिशन के अन्तर्गत नमामि गंगे परियोजना के सहयोग से दो प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 118 प्रतिभागी भाग लिये।
- दिनांक 02.08.2025 को केन्द्र पर पी0एम0 सम्मान निधि कार्यक्रम, दिनांक 16–22.08.2025 तक गाजर घास उन्मूलन एवं दिनांक 17.09.2025 से 02.10.2025 तक केन्द्र में एवं विभिन्न गॉवों में स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत जागरूकता कार्यक्रम एवं गोश्ठी का आयोजन किया गया।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रिमास में 13 कृषकों की समस्या समाधान, वैज्ञानिकों द्वारा 10 कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण, दो कृषक दल का केन्द्र पर भ्रमण), एक वैज्ञानिक कृषक संवाद व विभिन्न विषयों पर 08 व्याख्यान देकर कुल 326 किसानों को लाभान्वित किया गया।
- केन्द्र द्वारा 29–30 सितम्बर को पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम (पीपीवीएफआरए), 2001 विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। डा0 मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा, डा0 जितेन्द्र क्वात्रा ने अतिथियों का स्वागत एवं कार्यशाला के विषय में जानकारी दी। तकनीकी सत्र में डा0 विश्वजननी सत्यगिरी, श्री विजय जरधारी, पर्यावरणविद् व पंतनगर से आये वैज्ञानिकों द्वारा व्याखान दिया गया। कार्यशाला में जिलाधिकारी श्री मनीष कुमार ने जनपद के बीज संरक्षण विषय में चल रही योजनाओं की जानकारी दी। कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारी एवं वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया।

पौध किस्म और कृशक अधिकार संरक्षण अधिनियम कार्यशाला

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत टमाटर में 0.4 है0 मे 20, अदरक में 0.2 है0 में 4 तथा मल्टीकट ज्वार के 10 परीक्षण लगाये गये। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत, संकर बासमती धान में 4.0 है0 में 10, संकर धान में 3.0 है0 में 10, मक्का मे 2.0 है0 में 05, अदरक में 0.4 है0 में 20 प्रदर्शन, पोषण वाटिका के 30 प्रदर्शन तथा प्राकृतिक खेती के अंतर्गत अदरक में 0.4 है0 में 20 प्रदर्शन आयोजित किये गये।
- केन्द्र द्वारा कुल 12 प्रशिक्षणों का आयोजन करते हुए 267 कृषकों तथा कृषक महिलाओं को लाभान्वित किया गया। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत कृषि सखियों हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक 21.8.25 को आयोजित किया गया।
- विश्व स्तनपान सप्ताह दिनांकः 01–07 अगस्त, गाजर घास जागरुकता सप्ताह दिनांक 16–22 अगस्त, राष्ट्रीय पोषण सप्ताह 01–07 सितम्बर को आयोजित किया गया। इसी क्रम में स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम दिनांक 17 सितम्बर से 01 अक्टूबर, 2025 को आयोजित किया गया।
- धान उत्पादक क्षेत्र में बौनापन विषाणु जनित रोग लगने के कारण

अधिक उत्पादन देने वाली एवं अगेती रोपाई की गई धान की फसल इस रोग की चपेट में सर्वाधिक आई है। रोग के प्रबंधन हेतु वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा निदान सम्बन्धी तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी। मक्के की फसल में फाल आर्मी वर्म कीट से कृषकों को इससे सतर्क रहने और आवश्यकतानुसार संस्तुत रसायन का प्रयोग करने का सलाह दिया गया।

प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान प्रशिक्षणार्थी

- बकरी प्रदर्शन इकाई में बरबरी बकरी का पालन किया जा रहा है। इनके मांस की गुणवत्ता, रोगरोधी क्षमता और कम रखरखाव को देखते हुए किसानों को प्रशिक्षण और प्रदर्शन के माध्यम से इस नस्ल को अपनाने की सलाह एवं अभियान चलाया जा रहा है।
- केन्द्र द्वारा आतमा परियोजना के अंतर्गत कृषक–वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 19–20 अगस्त 2025 को किया गया। इस अवसर पर किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों तथा सरकार की विभिन्न किसान हितैषी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गयी।
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत 32 महिला कृषकों को तीन दिवसीय प्रशिक्षण धान फसल में उत्पादन तकनीकी एवं धान में प्रसंस्करण तकनीक विषय पर आयोजित किया गया। दिनांक 08.09.2025 से 12.09.2025 तक हिमाचल प्रदेश के जिला सिरमौर के नाहन ब्लाक के 20 किसानों का प्रशिक्षण शिविर "Training on Tropical and Sub & tropical Horticulture" आयोजित किया गया। टीएसपी परियोजना के अंतर्गत मशरूम के विपणन, पैकेजिंग एवं स्टार्टअप योजनाओं पर 20–21 सितंबर, 2025 तक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा 15 हेक्टेयर में कुल 6 ऑन फॉर्म ट्रायल व 25 हेक्टेयर में 252 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गये हैं। उक्त अवधि में कृषकों हेतु लाभकारी 23 प्रशिक्षण आयोजित किये गये।
- केंद्र द्वारा 50 कृषि स्नातकों हेतु प्रशिक्षण एवं परिचयात्मक दौरे का आयोजन किया गया। इस अवधि में किसानों के खेतों पर 103 बार वैज्ञानिकों का भ्रमण तथा 197 बार किसानों द्वारा कृषि संबंधी समस्याओं के निराकरण हेतु केंद्र पर भ्रमण किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषय अंतर्गत किसानों एवं विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन हेतु कुल 47 व्याख्यान दिए गए। इस अवधि में वैज्ञानिकों द्वारा 9 वेबीनार, 17 गोष्ठियों, पांच रेडियो टॉक तथा 6 अभ्यास प्रदर्शनों में प्रतिभाग किया गया।
- केंद्र पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का 55वां स्थापना दिवस, गाजर घास उन्मूलन सप्ताह, एक पेड़ मां के नाम एवं स्वच्छता अभियान जैसे कार्यक्रमों का सजीव प्रसारण भी किसानों को दिखाया गया।

स्वच्छता अभियान कार्यक्रम

केंद्र पर बकरी पालन इकाई, जय गोपाल केचुआ खाद उत्पादन इकाई, मषरुम उत्पादन ईकाई, मत्स्य उत्पादन इकाई एवं अन्य इकाइयों में भी कार्य किये गये है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत फसल धान (पूसा बासमती1847) का 30 कृषकों के 5.4 हैक्टेयर, मडुवा (वी.एल. 379) एवं झंगोरा प्रजाति (पी.आर.जे. 1) का 20 कृषकों के 0.4 हैक्टेयर प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन लगाया गया। पोषण वाटिका प्रथम पंक्ति के अन्तर्गत सब्जी बीज एवं पौध का वितरण किया गया। मत्स्य प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत मछलियों की बढ़त का मूल्यांकन किया गया एवं उच्च उत्पादकता हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये।
- प्रक्षेत्र पर परीक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत सीडलिंग ट्रान्सप्लांटर, डंग कलैक्टर एवं मेज सैलर के प्रयोग द्वारा महिलाओं में श्रम एवं समय की बचत के लिये 10 महिलाओं को चयनित कर प्रशिक्षण दिया गया। बी0एम0आई0 के आधार पर कुपोषित बालिकाओं के लिये मोटे अनाजों के विभिन्न व्यंजनों के प्रयोग के बारे में जानकारी दी गयी।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा कृषक एवं महिला कृषकों के लिये कुल 21 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर जानकारी दी गयी। आर्या परियोजना के अन्तर्गत कुक्कुट पालन तथा शोभाकारी मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही ऑनलाइन बाजारीकरण प्रक्रिया से भी अवगत कराया गया।

स्वच्छोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

- अन्य विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत हरेला कार्यक्रम तथा 'एक पेड़ मॉ के नाम' के अन्तर्गत पन्त लैमन–1 के पौधे लगाये गये। इसी क्रम में दिनांक 17.09.2025 से 02.10.2025 तक स्वच्छोत्सव कार्यक्रम आयोजित किये गये। केन्द्र की गतिविधियों की सूचना 17 प्रेस विज्ञप्तियों के माध्यम से विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित की गयी।
- विगत त्रैमास के अन्तर्गत तीन कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम, महिला स्वयं सहायता समूह की मासिक बैठको के अन्तर्गत सदस्याओं को आयोपार्जन के विभिन्न आयामों की जानकारी दी गयी। वैज्ञानिकों द्वारा क्षेत्र की पारम्परिक फसलों, पर्वतीय क्षेत्रों में फलों की बागवानी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जियों की पैदावार उपयुक्त तकनीकों पर सामुदायिक रेडियो जनवाणी पन्तनगर में वार्ता दी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा 56 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर कुल 1167 कृषकों को लाभान्वित किया गया। इसी क्रम में ग्रामीण युवाओं हेतु 04 रोजगारपरक प्रषिक्षण तथा वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 05 प्रशिक्षण आयोजित किया गये।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत धान–4.20 है0, सोयाबीन–3.0 है0, गहत–2.0 है0, मंडुआ–10.0 है0, कीवी–0.5 है0, आम–0.5 है0, कद्दूवर्गीय (लौकी, कद्दू व खीरा)–0.2 है0 व मक्का–1.0 है0 में प्रदर्शन लगाये गये।
- इस अवधि में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 34 भ्रमण कर कृषकों के कृषि आधारित समस्याओं का निराकरण किया गया। केन्द्र पर संचालित विभिन्न गतिविधियो की जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु अनेक किसानों द्वारा केन्द्र पर

मशरूम उत्पादन पर प्रषिक्षण कार्यक्रम

भ्रमण किया गया। केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा दो रेडियो वार्ता व स्थानीय समाचार पत्रों में 14 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया। केन्द्र के प्रक्षेत्र से कृषकों को उन्नत प्रजाति के विभिन्न सब्जियों, फूलों व औषधीय पौधे कृषकों/स्थानीय नागरिकों को विक्रय किये गये।

- समेकित नाशीजीव प्रबंधन पर दिनांक 12 जुलाई, 2025 को कृषि चौपाल कार्यक्रम का सीधा प्रसारण, दिनॉक 02 अगस्त, 2025 को पीएम किसान सम्मान कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया। इसी क्रम में दिनांकः 16.08.2025 से 22.08.2025 तक गाजर घास जागरूकता सप्ताह मनाया गया। दिनॉक 16 से 30 सितम्बर 2025 तक स्वच्छता ही सेवा अभियान–2025 कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग)

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 04 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं 04 ऑन फार्म ट्रायल आयोजित किये गये। इस अवधि में कुल 14 प्रशिक्षण आयोजित किये गये।
- प्रक्षेत्र में ड्रैगन फ्रूट की रॉयल रैड प्रजाति का उत्पादन किया जा रहा है।
- खरीफ सब्जी उत्पादन के तहत संरक्षित खेती में टमाटर की हिमशिखर, इण्डम 1313, शिमला मिर्च की इंदरा तथा क्राप कैफेटेरिया में बैंगन की नवकिरण, जयंत, बृजेश, पी.पी.एल.–74, मूली की स्पार्कल व्हाइट, मिर्च की गोपी–520, फैंचबीन की फाल्गुनी तथा भिण्डी की अनामिका तथा चौलाई की इंडम लाल, सुपर फूड, अमरेंथ ग्रीन प्रजातियों के मूल्यांकन एवं प्रदर्शन संचालित हुए।

ड्रेगन फ्रूट की प्रजाति का प्रदर्शन

- केन्द्र द्वारा 12 जुलाई, 2025 को कृषि चौपाल तथा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा वित्तपोषित तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित कर मशरूम उत्पादन, मौनपालन, संरक्षित खेती तथा मोटे अनाजों के मूल्यसंवर्धन के बारे में जानकारी दी गयी।
- केन्द्र द्वारा हरेला पर्व जुलाई 16, 2025, गाजर घास उनमूलन कार्यक्रम 16–22 अगस्त, 2025 एवं स्वच्छता ही सेवा (स्वच्छोत्सव) कार्यक्रम सितम्बर 17 से अक्टूबर 02, 2025 तक मनाया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत पादप सुरक्षा धान, मादा (15–20 वर्ष) के पोषण में सुधार हेतु पोशक तत्व मिश्रणों का मूल्यांकन, तालाब के पर्यावरण को स्वस्थ रखने हेतु प्रोबायोटिक पूरक का मूल्यांकन, पंगेसियस मछली प्रजातियों की वृद्धि दर का मूल्यांकन इत्यादि परीक्षण संचालित किये जा रहे हैं।

पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत भिण्डी (पूसा भिण्डी–5), कद्दूवर्गीय फसलों में फल मक्खी प्रबन्धन, धान में तना छेदक नियंत्रण, मत्स्य पालन, पोषण वाटिका इत्यादि के कुल 21 है. क्षेत्रफल में प्रदर्शन संचालित हो रहे हैं।
- कृषक/कृषक महिलाओं के आवश्यकतानुरूप प्रशिक्षण करवाते हुए उनका क्षमता विकास किया गया।
- प्रक्षेत्र की गतिविधियों के अन्तर्गत धान में रसायन छिड़काव, पौध उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट इकाई, गाय एवं बकरी इकाईयाँ संचालित हो रही है।
- एपीडा के सहयोग से बासमती धान के उत्पादन हेतु कीट नाषकों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग पर कार्यशाला आयोजित किया गया।
- अन्य कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वच्छता ही सेवा, कृषक सम्मान निधि एवं एफ.पी.ओ. के अन्तर्गत प्रशिक्षण, तीन कृषि चौपाल एवं उन्नत कृषि सम्बन्धी 08 प्रेस विज्ञप्ति स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाषन हेतु दिया गया।

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की गतिविधियाँ

- Millet 77- A Recipe Book लेखक डॉ. अर्चना कुशवाहा, प्राध्यापक एवं डॉ. आयुषी जोशी, खाद्य एवं पोषण विभाग, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय का विमोचन 22 अगस्त 2025 को मा. राज्यपाल ले.ज.गुरमीत सिंह (से.नि.) द्वारा किया गया। इस पुस्तक में 77 व्यंजनों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी है।

- गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में चल रहे तीन दिवसीय ''श्री अन्न महोत्सव'' में बाजरा से बने विभिन्न खाद्य उत्पादों/व्यंजनों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री अजय टम्टा जी, मा. सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा किया गया।

प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियाँ

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक)

भ्रमण पर आये 280 कृषकों/आगन्तुकों को एकल खिड़की वितरण प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को ₹ 12,985.00 मूल्य के विभिन्न विषयों के कृषि साहित्य/पुस्तक एवं ₹ 10,860.00 मूल्य के विभिन्न सब्जियों यथा– लोबिया, धनिया, भिण्डी, बैंगन, पालक, मेथी, लौकी, टमाटर, मूली एवं तोरई आदि के बीज केन्द्र के विक्रय पटल से उपलब्ध कराये गये। इस अवधि में कृषक हैल्पलाईन/कॉल सेन्टर 05944–234810 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये 50 समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

कृषक प्रदर्शन इकाई

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में रसायन मुक्त खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु

समन्वित कृषि प्रणाली इकाई स्थापित की गयी है। यह यूनिट कृषकों को प्रति इकाई कम कृषि लागत से अधिक आय अर्जन हेतु प्रेरित करती है। वर्तमान में इस प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर गोभीवर्गीय सब्जियाँ, चुकन्दर, पालक, मूली, मैथी, धनिया, प्याज इत्यादि सब्जियों के बुवाई की प्रक्रिया गतिमान है।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल तीन प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्रशिक्षण के मुख्य विषय उन्नत बकरी पालन, बाजार आधारित प्रसार तथा रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित कराये गये। इन कार्यक्रमों में उद्यान एवं कृषि विभाग

बकरी पालन इकाई का भ्रमण

के अधिकारी, आतमा के अधिकारी, विभागीय अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक सहित कुल 69 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित वित्त पोषित प्रशिक्षण

दो ऑनलाइन प्रशिक्षण ''उर्वरक एवं कृषि रसायन प्रबन्धन'' क्रमषः जुलाई 01–15, 2025, जनपद–पिथौरागढ़ एवं सितम्बर 01–15, 2025, जनपद–अल्मोड़ा के प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समिति के सचिवों हेतु आयोजित किया गया। दोनों प्रशिक्षणों से कुल 75 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा अक्टूबर–दिसम्बर, 2025 में आयोजित होने वाले प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	प्रसंस्कृत दुग्ध उत्पादों से आर्थिक सशक्तिकरण	अक्टूबर 29–31, 2025
2.	ग्रामीण युवाओं हेतु स्वरोजगार–परक कुटीर उद्योग	नवम्बर 19–22, 2025
3.	मौन पालनः स्वरोजगार का सशक्त माध्यम	दिसम्बर 16–19, 2025

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा कुल 12 प्रायोजित प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 550 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के विषय कृषि विविधिकरण, पशुपालन प्रबन्धन, जैविक खेती, मिलेट्स पुनरोद्धार एवं कृषि इत्यादि से सम्बन्धित थे।

सफलता की कहानी :

उन्नत कृषि से खुशियों की उड़ान

श्री केदार सिंह, ग्राम–दाड़िमी, विकास खण्ड–लमगड़ा, जनपद–अल्मोड़ा के निवासी हैं। श्री सिंह इण्टर पास करने के बाद जनकपुरी डिस्ट्रिक सेन्टर, दिल्ली में रू. 10,000.00 की नौकरी कर रहे थे। परन्तु वहाँ का वातावरण उन्हें रास नहीं आ रहा था और अंततः वे गांव लौट आये। युवा कृषक श्री केदार सिंह ने गांव आने के बाद परम्परागत धान और गेहूं की

खेती को दरकिनार करते हुए बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन प्रारम्भ करने की ठानी। प्रारम्भ में आपने उद्यान विभाग के अधिकारियों से पूछ कर सब्जी उत्पादन शुरू किया। आप विपरीत परिस्थितियों से जुझते हुए धीरे–धीरे शिमला मिर्च, टमाटर और प्याज जैसी फसलों से सब्जी उत्पादन शुरू किये। इनके रूझान को देखते हुए पंत विश्वविद्यालय द्वारा तकनीकी सलाह एवं रेखीय विभागों द्वारा पर्याप्त सहयोग दिया गया, जो इन्हें कृषि के क्षेत्र में पारंगत बना दिया। इसी बीच आपको आतमा परियोजना के माध्यम से समेटी, पंतनगर में आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों में जाने का मौका मिला। वहां सब्जी उत्पादन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, जैम–जैली बनाने की विधि तथा पौधशाला प्रबन्धन जैसे अनेक प्रशिक्षणों में भाग लिया। वर्तमान में अपनी नर्सरी से आप स्थानीय बाजार में प्याज, शिमला मिर्च, बैंगन, टमाटर इत्यादि की पौध का विक्रय करने के साथ–साथ जैविक सब्जी का उत्पादन भी करते हैं। आपने अपने घर में ''किसान गृह उद्योग'' नामक मसाला यूनिट स्थापित की है, जिससे समय–समय पर लघु स्तर पर आय होती रहती है। आप स्थानीय बाजार में एक रेस्टोरेंट भी चलाते हैं, जिसमें अपने खेत की उत्पादित सब्जियों का प्रयोग कर अतिथियों को स्वादिष्ट व्यंजन परोसते हैं। रेस्टोरेंट से आपने लगभग 04–05 लोगों को रोजगार प्रदान किया है। आपको आतमा द्वारा वर्ष 2023 में मत्स्य पालन के क्षेत्र में ''किसान श्री'' पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्य आरम्भ करने से पहले आपको आस–पास के लोग हतोत्साहित करते थे, परन्तु आपने हिम्मत नहीं हारी और फलस्वरूप आज आपकी सालाना आय ₹ 4 लाख तक हो जाती है। यही आप बताना नहीं भूलते हैं कि 6–7 वर्ष पूर्व जब कृषि प्रारम्भ किये थे उस समय इनकी वार्षिक आय मुश्किल से ₹ 30 हजार होती थी। गांव और आसपास की युवा पीढ़ी के लिए आज आप एक मिसाल बन गये हैं।

आप कहते हैं कि ''कुछ किये बिना ही जय–जयकार नहीं होती, कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती''।

निदेशक की कलम से

देश का वर्तमान खाद्यान्न उत्पादन लगभग 350 मिलियन टन है जो कि वर्तमान जनसंख्या हेतु पर्याप्त है, परन्तु वर्ष दर वर्ष बढ़ती जनसंख्या के भरण–पोषण हेतु भविष्य में यह अपर्याप्त होगा। कृषि वैज्ञानिक, अधिकारी एवं प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए यह एक चुनौती है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के मद्देनजर किसान भाईयों एवं बहनों को जलवायु के अनुसार क्लाइमेट स्मार्ट कृषि पद्धतियों को अपनाना होगा। कुपोषण की समस्या को कम करने के लिए ऐसी प्रजातियों का चयन करना होगा जो कि प्रोटीन, जस्ता तथा लौह तत्व में प्रचुर हों। साथ ही श्रीअन्न (मोटे अनाज) को पर्वतीय क्षेत्रों के साथ मैदानी क्षेत्रों में भी कृषि प्रणाली का अभिन्न अंग बनाना होगा। उत्तराखण्ड के अधिकांश लघु एवं सीमान्त कृषक अभी भी कृषि के नवीनतम विधाओं से परिचित नहीं हैं। अतः उन कृषकों के लिए ऐसी कार्ययोजना बनानी होगी जो कम लागत, गैर आर्थिक निवेशों के उपयोग पर आधारित एवं कुशल प्रबन्धन से भरपूर हो। कृषि वैज्ञानिकों ने अनुसंधान केन्द्रों पर परीक्षण कर यह सिद्ध कर दिया है कि नयी तकनीक अपनाकर आमदनी में पर्याप्त वृद्धि की जा सकती है। अब समय की माँग है कि इन नव विकसित तकनीकों को कृषक समुदाय तक पहुँचाकर उनको आत्मनिर्भर बनाया जाय। आज उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र कृषकोपयोगी तकनीकों को कृषकों के द्वार तक पहुंचाने के साथ–साथ उनकी समस्याओं के निदान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्र के किसान गर्मी का धान लगाते आ रहे हैं, जो भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं है। इस समस्या के निराकरण हेतु कृषि वैज्ञानिकों द्वारा धान के प्रतिस्थापन के रूप में मक्का उत्पादन तकनीक विकसित की गई, जिसे अपना कर कृषक आय अर्जन के साथ–साथ जल स्तर को और नीचे गिरने से बचाने में वैज्ञानिकों के साथ खड़े नजर आ रहे हैं, इसके लिए उन्हें बधाई। निश्चित रूप से वैज्ञानिकों और कृषकों का यह गठजोड़ कृषकों की दिशा और दशा सुधारने में मील का पत्थर साबित होगा। इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान को उनके कुशल नेतृत्व हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। पत्रिका के सम्पादन में सहयोग हेतु डा. बी.डी. सिंह, संकाय सदस्य, प्रसार शिक्षा निदेशालय को बधाई देता ह

(डा० जितेन्द्र क्वात्रा)
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

आभार

कृषि विश्वविद्यालय एवं शोध केन्द्रों द्वारा विकसित तकनीक को कृषकों तक पहुँचने में बहुत समय लग जाता है। कृशि विज्ञान केन्द्र, शोध संस्थानों एवं कृषकों के बीच एक सेतु की भांति कार्य करते हुये उन्नत तकनीकों को कृषकों के बीच लोकप्रिय बनाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। केन्द्र सरकार द्वारा ग्रामीणों की आजीविका उन्नयन एवं आय वृद्धि हेतु अनेक कृषि विकास कार्यक्रम यथा मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, परंपरागत कृषि विकास योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, राष्ट्रीय बागवानी मिशन, डेयरी उद्यमिता विकास योजना, पशुधन बीमा योजना आदि संचालित की गयी हैं जिनकी जानकारी कृषकों तक पहुँचाने में भी ये वैज्ञानिक सक्रिय भूमिका अदा कर रहे हैं। पंत प्रसार संदेश पत्रिका के माध्यम से प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं इसके अधीन कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा संचालित विभिन्न प्रसार गतिविधियों की जानकारी कृषकों एवं अन्य हितधारकों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। पूर्व अंकों की सफलता के बाद वर्तमान अंक आपके हाथों में है। आषा है कि यह अंक भी अपने उद्देष्य में सफल रहेगा। इस पत्रिका को तैयार करने में निदेशक प्रसार शिक्षा से प्राप्त दिशा–निर्देश व प्रोत्साहन हेतु मैं उनका आभारी हूँ। कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी अधिकारियों, वैज्ञानिकों तथा मुख्यालय के सभी वैज्ञानिकों/कार्मिकों का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने पत्रिका को तैयार करने में अमूल्य सहयोग दिया है। पत्रिका को और उपयोगी बनाने हेतु आप अपने सुझाव अन्तिम पृष्ठ पर उल्लिखित फोन नम्बर अथवा मेल आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं। आपका सुझाव हमारे लिए सर्वोपरि होगा।

धन्यवाद।

(डा० बी.डी. सिंह)
प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड
दूरभाष : 05944–233336, 233811, ई–मेल : direxteduqbp@gmail.com
हेल्प लाइन : 05944–234810
संरक्षक : डॉ० मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)